Detail Proposal and Financial Statement

योजना का नाम - शतपथ ब्राह्मण (माध्यन्दिन) मौखिक परम्परा का जतन व संवर्धन।

महत्व - ' मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम् ' ऐसा वेद में कहा गया है । अर्थात संहिता और ब्राह्मण ग्रंथो का अध्ययन करने से ही अपनी अपनी शाखा का अध्ययन पूर्ण होता है । अगर ब्राह्मण ग्रंथोंका अध्ययन नही किया जाता तो ' अमुक शाखाध्यायी ' ऐसा हम संध्यावंदन के समय नही कह सकते । अगर कहते है तो गायत्री माता से हम झूठ बोलते है ऐसा प्रतीत होता है । इसलिए ब्राह्मण और षडङ्गोका अध्ययन करना वैदिक परम्परा में अनिवार्य होता है ।

शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा के ब्राह्मण ग्रंथ का नाम 'शतपथ ब्राह्मण ' है । यहाँ पथ शब्द अध्यायवाचक है । इस तरह नाम से ही हम समझ जाते है की यह ग्रंथ सौ (१००) अध्यायोंका है । इसमे दर्शपूर्णमासेष्टि, सब प्रकारके सोमयाग आदि विषयोंका विवरण तो आताही है, परंतू वेदस्वाध्याय प्रशंसा, पंचमहायज्ञोंकी महत्ता, आचारनिष्ठता, वेदांत शास्त्र , मृत्युपर विजय प्राप्त करने का मार्ग , ऋषी परंपरा का विवेचन आदि व्यावहारिक विषयोंका भी विस्तार से वर्णन किया गया है । इसका विस्तार स्वरूप जाना जाए तो १०० अध्याय, ६८ प्रपाठक, ७८०० कंडिकाए है । इन कंडिकाओंको ऋग्वेद जैसी ऋचाएँ बनाते है तो २८००० से भी जादा ऋचाएँ हो जायेगी । ये ग्रन्थ उच्चारण के लिए भी कठिणतम ग्रंथ है । ऋग्वेदादि ब्राह्मण ग्रंथ गाथा ग्रंथ कहलाते है क्यो की इसमें स्वर नही होते है । इसलिए सिर्फ शब्दोंका उच्चारण करना बहुत ही सरल हो जाता है । लेकिन शतपथ ब्राह्मण में उदात्त अनुदात्त स्वर रहते है और वे हाथ से दिखाने पडते है । इसलिए इस ग्रंथ की कठिणता और भी बढती है । इसके काठिण्यके कारण शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखामें जादातर लोग ये ग्रंथ पढने में उत्साह नही दिखाते । इसी कारण पूरे भारतवर्ष में सिर्फ १०/१५ वैदिक ही होंगे जिन्होने इस शाखा का

सांङ्ग अध्ययन किया हो । उनमें भी शुद्ध परम्परा से अध्यापन करने हेतू सक्षम केवल ३/४ ही वैदिक है । और वे भी वयस्क हो चुके है । अगर ऐसी ही स्थिती रही तो अगले २५ साल के बाद ये ग्रन्थ विशुद्ध रुप से कहनेवाला एक भी वैदिक नही रहेगा । इतनी गंभीर स्थिती इस ग्रंथ की हो रही है । लेकिन यह परिस्थिती मै बदलना चाहता हूँ। इसलिए मैने खुद घनपाठी होने के बाद सलक्षण वेदाभ्यास किया है । और यह शतपथ ब्राह्मण तथा षडङ्ग मै अपने छात्रोंको सोपना चाहता हूँ । इससे अपनी प्राचीनतम भारतीय ऋषी परम्परा का जतन एवं संवर्धन होगा ऐसा मेरा विश्वास है ।

आपकी संगीत नाटक अकादमी इस प्राचीन परम्परा को जतन करना चाहती है और इसके लिए धनराशी देकर हम जैसे वैदिकोंका उत्साहवर्धन कर रही है यह जानकर हमे बहुत खुशी हुई । इस बात के लिए मै आपका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ । अगर आप मुझपर विश्वास करके मेरी वेदाध्यापन योजना को आर्थिक मदद करते है तो मै आपके इस विश्वास को कभी टूटने नही दूँगा । इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है की मेरी योजना को आर्थिक मदद देकर वेद की मौखिक परम्परा का जतन एवं संवर्धन करे ।

॥ श्री ॥

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परंपराओंके संरक्षण की योजना का प्रपत्र :-

१) प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य - महाराष्ट्र राज्य

२) योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का नाम- शतपथ ब्राह्मण (माध्यंदिन) मौखिक परंपरा का जतन व संवर्धन।

३) योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से सम्बंधित समुदाय की भाषा - प्रांत की बोली भाषा- मराठी। (देवनागरी)

४) इस योजना के सम्बंधित व्यक्ती का नाम- वेदमूर्ति श्री. मंदार नारायण शहरकर, पुणे सम्पर्क क्र.- ०९८८१८३६१६३

५) इस योजना के विषयों से सम्बंधित ग्राम- वाराणसी- उत्तर प्रदेश

नागपूर- महाराष्ट्र

६) इस योजना की परिभाषा - मौखिक परंपराएं एवं अभिव्यक्तियों (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है।)

८) इस योजना से सम्बंधित अधिकारी व्यक्ती तथा उनका उत्तरदायित्व-जिस ब्राह्मण व्यक्ति का उपनयन संस्कार हुआ हो वह भारत में रहनेवाला हर ब्राह्मण इस वेद परंपरा का अधिकारी है।

"ब्राह्मणेन निष्कारणेन षडङ्गो वेदो ऽ ध्येतव्य : ज्ञातव्यश्च"। ऐसी श्रुती की आज्ञा है। और इस आज्ञा के अनुसार हर ब्राह्मण व्यक्ति का यह उत्तरदायित्व है कि वह षडङ्ग सहित वेद का अध्ययन करें। और अध्ययन होने के बाद इस परम्परा को आगे बढाने के लिए- अगली पीढी को शिक्षित करें। और यह अध्यापन कार्य पूर्णत: निस्पृह वृत्ति से करें। येही प्राचीन ऋषिपरम्परा है।

अध्ययन करते समय तथा अध्यापन करते समय भी किसी से भी कोई भी प्रकार का मान- सन्मान, प्रतिष्ठा, दिखावा या पैसे की लालच नही रखनी चाहिए।

९) यह ज्ञान विद्यार्थियोंको पढाकर ही आगे बढाया जा सकता है। इसके जतन के लिए ऑडियो रेकॉर्डिंग तथा व्हिडिओ रेकॉर्डिंग भी किया जा सकता है। लेकिन पढना- और पढाना ये ही प्रभावशाली माध्यम हमारी गुरूकुल परंपरा का रहा है। महर्षि याज्ञवल्क्य से लेकर आजतक ये ही अक्षुण्ण परंपरा चलती आ रही है।

१०) इन वेदों में मानवी जीवन सुचारू, रूप से चलने के लिए अनेकों तरीके बताए गए है। इन उपायों से संपूर्ण विश्व के मानवों का, पशु-पक्षीयोंका, कीटकादि जीवों का, वनस्पतियों तथा वृक्षों का जीवन सुरक्षित हो सकता है। वेदों में बताए गए अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, शरीरशास्त्र, संरक्षण शास्त्र इन सब शास्त्रों से राष्ट्र का आराधन हो सकता है। वेदोऽ खिलो धर्ममूलम् इस वचन के अनुसार वेद ही संपूर्ण सनातन धर्म के मूल आधारस्तंभ है। इस वेद परंपरा से ही इस भारत राष्ट्र की धरोहर चलती आ रही है। इसलिए केवल भारत वर्ष की ही नही, बल्कि संपूर्ण विश्व के मानवीय समाज के सांस्कृतिक जीवन के लिए यह वेद परंपरा बहुत ही महत्वपूर्ण मायने रखती है।

१२) अस्मिन् राष्ट्र प्रसूतस्य सकाशात् अग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा : ।

अर्थात इस राष्ट्र के जो ब्राह्मण है उनसे, संपूर्ण विश्व के मानवोंने अपना अपना चरित्र एवं संस्कृति का ग्यान पढना चाहिए।

क्योंकि वेद का अध्ययन करने से उनको संपूर्ण मानव जाति का हित किसमें है ? यह ग्यान रहता है। और ऐसे वेदग्यानी पंडितों से हम अपनी सामाजिक संस्कृतियों का ग्यान लेंगे तो वह संपूर्ण मानव समुदाय के लिए बहुत ही लाभदायी होगा।

१३) इसमें ऐसी कोई बात नही जिससे आंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानवों के प्रतिकूल माना जायेगा। या इसमे से किसी भी बात से समुदाय, समुह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस नही पहूँचेगी। इस सांस्कृतिक परंपरा में ऐसा भी कुछ नही जिससे देश के कानून या फिर उनसे जुडे समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो। या विवाद खडा करती हो।

१४) हमारी चल रही यह योजना उसी दिव्य सांस्कृतिक विरासत से संबंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है।

१५) योजना के संरक्षण के लिए उठाये जानेवाले उपाय -

A) औपचारिक एवं अनौपाचारिक तरीके से प्रशिक्षण (संचरण)

B) पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध

C) ऑडियो तथा व्हिडीयो रेकॉर्डिंग

१६) भारत सरकार द्वारा संचलित 'राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान', उज्जैन के माध्यम से पूरे राष्ट्र में संचलित वेदपाठशालाओं, वेदाध्यापकों तथा वेद छात्रों को मानधन-छात्रवृत्ति देकर इस परंपरा को संरक्षण दे रहे है।

१७) इस दिव्य परंपरा को अपने ही लोगों से क्षति पहूँचने की संभावना इस प्रकार है:-

१. आधुनिक जीवनशैली

२. आधुनिक शिक्षा की परंपरा

३. ये सब इतनी मेहतन करने के बावजूद वैदिकों तथा वेद के प्रति समाज की उपेक्षा।

४. अपने ही दिव्य परंपरा को अंग्रेजी शिक्षा के सामने कम लेखना।

५. भारतीय परंपरा संरक्षित रखने का उत्तदायित्व संपूर्ण समाज का है यह बात अच्छी तरह से न समझना।

६. पढनेवाले या पढानेवाले लोगों की खुद की अनास्था।

इन सब वजहोंसे आज भारत की इस दिव्य वेद परंपरा लुप्तप्राय होती जा रही है। हर एक वेदशाखा के कई ग्रंथोंका अभ्यास न होने के कारण कई ग्रंथ मिलना भी मुष्किल होता जा रहा है। तो पढना बहुत ही दूर की बात है। अगर ऐसीही स्थिती चलती रही तो आगे चलकर हमें इन ग्रंथों के नाम भी मालुम नही होंगे। फिर उनमें भरा हुआ ग्यान हम कैसे आत्मसात करेंगे ? इसलिए वैदिक समाज ने पढना-पढाना और बाकी समाज ने उनको सुरक्षा तथा प्रोत्साहन देना इन दोनों अंगो से अपने अपने कर्तव्यों को हम निभाऐंगे तभी जाकर यह सांस्कृतिक परंपरा रहेगी अन्यथा लुप्त होने के ही मार्गपर है।

१८) संरक्षण के उपाय :-

१. हर एक राज्य में राज्य सरकार या राष्ट्रीय सरकार द्वारा संचलित वेदपाठशालाएं चलाना।

२. उन पाठशालाओंमें पढानेवाले अध्यापकों को सरकारी सेवक की तरह मानधन, पेन्शन, प्रॉव्हिडंट फंड इ. देकर उनका जीवन सुरक्षित करना।

३. इन पाठशालाओंमें पढनेवाले योग्य छात्रों को उचित छात्रवृत्ति देना। और पढाई खत्म होने के बाद उनको भी पाठशालाओंमें अध्यापक पद देकर उनका भी भविष्य उज्वल करना।

४. उन पाठशालाओंमें छात्र को- सामाजिक न्याय, कौटुंबिक उत्तरदायित्व, सामाजिक तथा सांस्कृतिक उत्तरदायित्व, मानवतावाद, व्यावहारिकता इ. विषयों का भी ग्यान देना।

५. लुप्तप्राय होते जा रहे ग्रंथों को पुनर्मुद्रित करना।

६. अच्छे विद्वानों की साहाय्यता से उन ग्रंथों की व्हिडीओ तथा ऑडियो रेकॉर्डिंग करना।

७. जिन विद्वानोंने अपना पूरा जीवन इस संस्कृति को संवर्धित करने के लिए प्रयास किए है उनका सम्मान करना।

११) इस योजना में समुदाय, समुह या व्यक्ति भी इस प्रकार सहभागी हो सकती है :-

१. यह योजना चलाने के लिए धन राशी के रूप में मदद करना।

२. धान्य राशी के माध्यम से भी सहाय्यता हो सकती है।

३. नगर पालिका की मदद से जगह उपलब्ध कराना।

४. योजना चलाने में आनेवाली बाधाएँ दूर करना। इ.

२०) मैं यह योजना अपने खुद के बलबूतेपर चला रहा हूँ। किसी संस्था, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिती, स्टीयरिंग समिती इन से संलग्न नही हूँ। मेरे ऊपर और वेदोंपर विश्वास रखनेवाले लोग व्यक्तिगत रूप से यथाशक्ति मुझे मदद करते है। किसी डाटाबेस आर्गेनायझेशन से संबंधित नही है।